10 उपसंहार

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध "बिलासपुर क्षेत्र के लोक गीतों में लोकजीवन" बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन के अध्ययन एवं विश्लेषण से सम्बन्धित फिर भी इसमें बिलासपुर क्षेत्र के जनसाधारण के विविध पक्षों का अवलोकन एवं चित्रण स्वयं ही हो जाता है।

आरम्भ "बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन" विषय शोध-प्रबन्ध की भूमिका से सम्बन्धित है। विषय-उपस्थापन के अन्तर्गत प्रस्तुत विषय प्रस्तावना, सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, विषय-परिसीमन, अध्ययन का महत्व, प्रस्तुत सामग्री के स्त्रोत एवं सीमाएँ, शोध-प्रबन्ध लेखन प्रविधि तथा अनुक्रम व अध्ययन एवं विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत विषय की मौलिकता, महत्त एवं नवीनता के विषय में जानकारी भूमिका के अध्ययन से ज्ञात हो जाती है।

पहले अध्याय में बिलासपुर क्षेत्र का सामान्य परिचय दिया गया है। बिलासपुर क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के विशिष्ट जनपदों में से है। बिलासपुर क्षेत्र चारों ओर से पर्वतों तथा समतलों से घिरा हुआ है। यहाँ का लोकजीवन पर्वत तथा समतल दोनों ही विशिष्टताओं को लिए हुए है। इसीलिए यहाँ का जन-जीवन सदैव से ही प्राचीन एवं नवीन संस्कृतियों को आत्मसात् किए हुए है। बिलासपुर क्षेत्र के नामकरण पर दृष्टिपात् करने से यह ज्ञात हो जाता है कि प्राचीन काल से ही यह देवतुल्य ऋषियों की तपोभूमि रही है। यह महाभा के रचयिता महर्षि व्यास तथा मार्कण्डेय जैसे देव-ऋषियों की तपोभूमि है।

बिलासपुर क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सम्पदाओं से समृद्ध है। बिलासपु के लोगों का सामाजिक-पारिवारिक जीवन, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, तथा विभिन्न जातियों और उनके व्यवसाय, त्यौहार एवं मेले इत्यादि अपनी स्थानीय एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति की विशिष्टताओं तथा गुण-अवगुणों का मिश्रण है।

दूसरे अध्याय में लोक साहित्य का स्वरूप एवं वर्गीकरण किया गया है, जिसमें विभिन्न विद्वानों द्वारा किया गया लोक साहित्य का अर्थ एवं स्वरूप, उद्भव एवं विकास, महत्व एवं विशेषताओं तथा वर्गीकरण का अध्ययन एवं विवेचन किया गया है ।

नि:संदेह लोक-साहित्य लोक मानस का अनन्त एवं अमर कोश है । लोक-साहित्य लोक-जीवन की भावना, चिन्तन एवं अभिव्यंजना को एक शाश्वत विधा है । लोक साहित्य की परिधि व्यापक एवं विस्तृत है, मुख्यत: इसे पाँच भागों-लोकगीत, लोक गाथा, लोक कथा, लोक नाटक तथा लोकोक्तियों में विभक्त किया जा सकता है । अध्ययन एवं विश्लेषण की दृष्टि से लोक-साहित्य के प्रत्येक भाग की विशिष्ट एवं पृथक् उपयोगिता अथवा महत्ता है । लोक साहित्य की विभिन्न विधाएँ जन-मानस के आदर्शों को दृढ़ता एवं स्थिर प्रदान करने के साथ-साथ पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था को जीवित रखने की स्पष्ट, किन्तु गहरी पृष्टभूमि सन्निहित रहती है । संक्षेप में किसी भी क्षेत्र के लोक समाज के विश्वासों, परम्पराओं, विचारों एवं भावों के विषय में समग्र जानकारी लोक-साहित्य के माध्यम से उपलब्ध की जा सकती है ।

तीसरे अध्याय में लोकगीतों का स्वरूप एवं वर्गीकरण को लेकर विचार किया गया है । नि:संदेह लोकगीत जनमानस के हृदय के प्रकृत, मधुर, सौम्य एवं सरस उद्गार हैं । वास्तव में लोकगीतों से किसी भी क्षेत्र की संस्कृति, वैभव परम्पराएँ, रीति नीतियाँ एवं धार्मिक सामाजिक क्रियाकलापों का यथार्थ एवं आदर्श स्वरूप का दिग्दर्शन हो जाता है । लोकगीत लोक की चेतना के संवाहक हैं । ये लोकगीत लोक मानस के सामूहिक सृजन हैं । इन गीतों में मानवीय भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता होती है । इन गीतों में किसी भी क्षेत्र की संस्कृति की झलक देखी जा सकती है । इनमें किसी भी समाज के समस्त पक्ष अनुस्यूत होते हैं ।

बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों को मुख्यत:- संस्कार, ऋतु, भक्ति, श्रम एवं जाति तथा अन्य गीतों के वर्गों में वर्गीकृत किया गया है । बिलासपुरी लो

अपने धर्म के प्रति पूर्णतः आस्थावान है तभी तो विभिन्न संस्कार सदैव अनके जीवन को प्रभावित एवं परिष्कृत करते हैं । ऋतु गीत भी बिलासपुरी जन-समाज में विभिन्न ऋतुओं के आगमन पर यहाँ मनाए जाने वाले विभिन्न त्यौहार एवं मेलों के विषय में ज्ञानवर्द्धन करते हैं । बिलासपुर क्षेत्र के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है । अतः यहाँ श्रमगीतों का विशेष महत्व है । कोई भी पारिश्रमिक कार्य करते समय लोक जो गीत अपनी थकान मिटाने के लिए गाता है, वही श्रम गीतों के अन्तर्गत आते हैं । जाति गीत बिलासपुर क्षेत्र में वास करने वाली जाति-विशेष की विशेषताओं को प्रकट करते हैं । भक्ति गीतों के माध्यम से लोक जीवन की गहन धार्मिक दृष्टि एवं विश्वास का पता चलता है । अन्य गीतों के अन्तर्गत मानवीय जीवन की विभिन्न प्रवृत्तियों का वर्णन निहित है ।

चौथे अध्याय में बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन के अध्ययन एवं विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्टतः ज्ञात हो जाता है कि यहाँ के लोक-गीत लोक-जीवन से जुड़े हुए हैं, जिनमें उनकी सूक्ष्म अनुभूतियाँ अनुप्रेरित हुई हैं । बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों (संस्कार, ऋतु, भक्ति, श्रम एवं जाति तथा अन्य गीत) में लोक जीवन की सरलता, स्वाभाविकता, सहजता, उत्कंठा, आवेग, मार्मिकता एवं सुलभता आदि भावों की अभिव्यक्ति हुई है । लयात्मक प्रभावन्विति तथा संगीतात्मकता तथा गेयता बिलासपुरी लोकगीतों की प्रमुख विशेषताएँ हैं ।

बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीत लोक-जीवन से सम्बद्ध हैं । लोक-जीवन के सुख-दुःख, हँसी-रोदन, प्रेम-घृणा, कटुता-मधुरता, रीति-कुरीति, आचार-विचार, चिन्तन - मनन, गुण-अवगुण, शक्ति-क्षीणता आदर्श-यथार्थ, प्रभाव-दुष्प्र सफलता-असफलता, जय-पराजय इत्यादि मानवीय मनोवृत्तियाँ बिलासपुरी लोकगीतों में व्यंजित हुई है । इन गीतों में मानवीय मनोभावों का विशद् वर्णन मिलता है ।

वास्तव में बिलासपुरी लोकगीतों को लोकजीवन की आत्मा कहा जाए, तो अतिशयोक्ति न होगी । इन गीतों में जीवन के समस्त पक्षों को उजागर

करने की क्षमता है । ये गीत युग युगान्तर से लोक-हृदय में वास करते रहे हैं । बिलासपुरी लोकगीतों में लोक-जीवन की प्राचीनता एवं अर्वाचीनता का सुन्दर समन्वय उपलब्ध होता है ।

पाँचवाँ अध्याय बिलासपुर क्षेत्र के संस्कार गीतों में लोकजीवन से सम्बन्धित है । सर्वप्रथम संस्कार का अर्थ स्पष्ट किया गया है । वैसे हिन्दूशास्त्र में सोलह संस्कारों का विधान है, परन्तु बिलासपुर क्षेत्र में सोलह संस्कारों की अपेक्षा जनम, कलबाल, विवाह तथा मृत्यु संस्कार अधिक लोकप्रिय तथा प्रचलित हैं । उपर्युक्त संस्कारों की पूर्णता बिलासपुर क्षेत्र में संस्कार विशेष पर गाए जाने वाले गीतों से मानी जाती है ।

बिलासपुर क्षेत्र में प्रचलित संस्कार गीत यहाँ के लोक-समाज के जीवन के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण तीन संस्कारों - जन्म, विवाह तथा मृत्यु के विविध पहलुओं को उद्घाटित करते हैं । इन संस्कार गीतों में प्राचीन भारतीय संस्कृति के पौराणिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, धार्मिक तथा यथार्थता के सहज भाव निहित हैं । बिलासपुर क्षेत्र के जन-जीवन की रीतियाँ, कुरीतियाँ, लोक-विश्वास, मान्यताएँ तथा स्वाभावादि का वर्णन इन संस्कार गीतों में सहज एवं स्वाभाविक रूप में हुआ है । इन गीतों के माध्यम से संस्कार विशेष की महत्ता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है । इन गीतों में जीवन में प्रचलित संस्कारों, कृत्यों, अनुष्ठानों एवं विधि-विधानों का वर्णन हुआ है ।

संस्कार गीतों के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि ये संस्कार गीत बिलासपुर क्षेत्र के लोकजीवन की मनोवृत्तियों को सदैव परिष्कृत एवं प्रभावित करते हैं तथा आदर्श जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा हमारा सन्मार्ग दर्शन करते हैं । ये संस्कार गीत बिलासपुर के लोगों के प्राचीन गौरवा सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण के परिचायक ही नहीं वरन् आज भी उसे सुदृढ़ एवं संगठित करने में सहायक हैं ।

छठे अध्याय में ऋतु गीतों में लोकजीवन के अध्ययनोपरान्त यह स्पष्टतः ज्ञात हो जाता है कि विभिन्न ऋतु गीतों के माध्यम से जनमानस की मनोवृत्तियाँ व्यक्त हुई हैं। बिलासपुर क्षेत्र के बारहमासी गीतों में प्रत्येक मास की विशेषता का सजीव चित्रण हुआ है। वर्षा, वसन्त इत्यादि ऋतुओं के आगमन पर जन के मन में उत्कंठा, उल्लास एवं उमंग का संचार होता है, जिसकी अभिव्यंजना लोक-गीतों में उपलब्ध हुई है। बिलासपुर क्षेत्र की प्राकृतिक सुषमा एवं मनोरमता से मंत्र-मुग्ध होकर तथा पक्षियों की मधुर गूँज के संग लोक-गायक भी उन्मुक्त कंठ से गुनगुना उठा है। बिलासपुर क्षेत्र की भूमि देव-धरा है। अतः यहाँ अनेक मेलों एवं त्यौहारों का आयोजन किया जाता है। इन मेलों एवं त्यौहारों को मनाने के पीछे बिलासपुरी लोक की सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक भावना पूर्णतः अन्तर्निहित रहती है। प्रकृति सम्बन्धी गीतों में बिलासपुर क्षेत्र के स्थान-विशेष के सौन्दर्य का सहज ही भान हो जाता है। श्रृंगारिक गीतों में नायक-नायिका के प्रणय सम्बन्धों को लेकर गीत रचे गए हैं। बिलासपुर क्षेत्र के प्रणय गीतों में प्रेम के दो शाश्वत पक्ष-संयोग और वियोग सर्वत्र वर्णित हुए हैं।

बिलासपुर क्षेत्र में प्रचलित मेले एवं त्यौहारों का घनिष्ठ सम्बन्ध ऋतु विशेष एवं फसलों से है। इन गीतों में लोक की धार्मिक भावना की अपेक्षा लौकिक जीवन का हर्षोल्लास एवं सुख-समृद्धि की ही प्रमुखता रहती है।

निःसन्देह बिलासपुर क्षेत्र के ऋतु गीत लोक-जीवन के मनोभावों को व्यक्त करने में सक्षम हैं। श्रृंगार रस का जितना सुन्दर वर्णन इन गीतों में हुआ है, उतना अन्यत्र खोजना दुर्लभ है।

सातवें अध्याय में बिलासपुर क्षेत्र के भक्ति गीतों में लोकजीवन को देखने का प्रयत्न किया गया है। इन गीतों में बिलासपुरी लोक-समाज की धर्म के प्रति गहन आस्था एवं पुनीत भावना दृष्टिगत हुई है। बिलासपुर क्षेत्र के

जन साधारण के भक्तिपरक विश्वास समस्त हिन्दू जाति के परम्परागत विश्वासों से साम्य रखते हैं। यद्यपि यहाँ के लोक-जीवन द्वारा भक्ति, पूजा, व्रत-उपवास, तथा धर्मादि संस्कारों की दृष्टि से हिन्दू शास्त्रीय पद्धति का ही अनुसरण किया जाता है किन्तु लोक में फिर भी अनेक स्थानीय लौकिक एवं धार्मिक प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं।

वास्तव में धार्मिक विश्वास की उत्पत्ति प्राकृतिक बाधाओं एवं रहस्य तथा आदि-मानव के सुख-दुःख से सम्बन्धित रही है, जो भक्ति और अनुष्ठान की विविध क्रियाओं और विधि-विधानों को जन्म देती है। अतः जन-धर्म का आधार एक ओर भावनात्मक विश्वास अथवा आस्था तो दूसरी ओर उससे अनुप्रेरित अनुष्ठान, पूजा-पाठ, व्रत-उपवासादि हैं। भक्ति गीतों में जन-जीवन के इन विभिन्न पक्षों के अवशेष स्वतः ही दृष्टिगोचर हो जाते हैं।

आठवें अध्याय में बिलासपुर क्षेत्र के श्रम एवं जाति गीतों में लोक-जीवन के अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्टतः ज्ञात हो जाता है कि यह क्षेत्र कृषि प्रधान है। यहाँ के लोगों की जीविका का मुख्य साधन कृषि ही है। बिलासपुरी क्षेत्र में कृषि की आधुनिक वैज्ञानिक विधियों का अभाव प्रायः ही है, यही कारण है कि यहाँ के कृषकों का जीवन अत्याधिक श्रम एवं आदि कृषि-विधियों पर ही अवलंबित है। अतः इस दृष्टि से श्रमगीतों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

बिलासपुर क्षेत्र के श्रमगीत यहाँ के कृषक के श्रमपरिहार के संबल हैं। बिलासपुर के प्राकृतिक सौंदर्य की मनमोहिनी छटा से प्रभावित होकर चरवाहा गीत गाने को उद्यत हुआ है। चक्की-चरखे के गीतों में नारी-जीवन के विभिन्न पक्षों का अवलोकन होता है। पालने के गीतों में शिशु के प्रति माँ के वात्सल्य एवं ममत्व के भाव हैं। बिलासपुर क्षेत्र के श्रमगीतों में मानवीय श्रम-परिहार की उत्कंठा, उत्सुकता एवं जिज्ञासा व्यंजित हुई है।

बिलासपुर क्षेत्र में अनेक जातियाँ निवास करती हैं । यहाँ के जाति गीतों में जाति-विशेष के जीवन एवं मनोवृत्तियों का सूक्ष्म अध्ययन करने से उनके विषय में सहज ही ज्ञान हो जाता है । इन गीतों के द्वारा जाति-विशेष के व्यवसाय का भी सहज ही ज्ञान हो जाता है । यहाँ निवास करने वाली विभिन्न जातियों के संस्कार, परम्परा तथा रीतियाँ लगभग समान है ।

बिलासपुर क्षेत्र के श्रम एवं जाति गीतों में विभिन्न मानवीय जीवन के भाव उभरे हैं । कृषक-जीवन कटु-संघर्ष एवं श्रम का नाम है । अतः बिलासपुर क्षेत्र के कृषक भी इसका अपवाद नहीं, तभी तो वह अपने श्रम एवं संघर्ष को विस्मृत करने के लिए मुक्त कण्ठ से गीत गा-गाकर जन-मन का मनोरंजन करता है ।

नौवाँ अध्याय बिलासपुर क्षेत्र के अन्य गीतों में लोकजीवन के विवेचनों परान्त निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि संस्कार, ऋतु, भक्ति, श्रम एवं जाति सम्बन्धी गीतों के अतिरिक्त लोक-जीवन के अन्य पक्षों से सम्बन्धित गीत भी अध्ययन एवं विवेचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं । वस्तुतः लोकगीतों में विविधता एवं विभिन्नता में ही जीवन की श्रेष्ठता सन्निहित है

बिलासपुर क्षेत्र के हास्य व्यंग्यमयी गीत लोक-वृत्ति की सजीवता एवं मनोविनोद के परिचायक हैं ।

पारिवारिक सम्बन्धों तथा सामाजिक रीतियों के गीत बिलासपुरी पारिवारिक सम्बन्धों का लोक जीवन में स्थान निर्धारित करते हैं । इन गीतों में ही समाज में प्रचलित रीति-कुरीतियों का अंकन भी हुआ है, इससे लोक की सजगता एवं सजीवता का परिचय मिलता है ।

बिलासपुर के बाल गीतों का क्षेत्र भी विस्तृत है । इन गीतों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विशेष महत्व है । बाल-मनोभाव एवं उत्सुकता का पूर्ण चित्रण इन गीतों में हुआ है ।

बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में नारी-चेतना, आदर्श, सतीत्व तथा नीति सम्बन्धी गीतों में लोक-कवि ने स्त्री की जागृति, भारतीय आदर्श नारी की छवि तथा जीवन के यथार्थ को नीति सम्बन्धी गीतों में वर्णित किय है ।

बिलासपुर क्षेत्र के प्राचीन इतिहास एवं राजनीतिक स्थिति का आभ भी हमें इन गीतों के अध्ययन से हो जाता है ।

वास्तव में अन्य गीतों में बिलासपुर के लोक-मानस के विभिन्न पक्षों को उजागर करने का प्रयत्न किया गया है ।

निष्कर्षतः बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीत लोक-जीवन के अक्षय भंडार हैं । यहाँ के लोकगीत लोकजीवन के अध्य से उत्पन्न होते हैं । इन लोकगीतों में जनमानस की यथार्थ भावनाएँ तथा कल्पना का समिश्रण है । इन लोकगीतों का क्षेत्र निस्सीम है । ये गीत, लोक-जीवन के समग्र तत्वों को उभारने वाले, उन पर प्रकाश डालने वाले तथा सीधे-सादे सच्ची भावनाओं को प्रकट करने वाले हैं बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोक की परम्पराओं और रीति-रिवाजों तथा समाज का सच्चा स्वरूप देखने को मिलता है । इन गीतों में बिला पुरी लोक का स्वतन्त्र व्यक्तित्व होते हुए भी इनमें भारतीय संस्कृति के अनुकर तथा आदर्शात्मक परम्पराओं का भी उल्लेख मिलता है । इन लोकगीतों में लोकजीवन के शाश्वत तथ्यों और संवेगों का पूर्णरूपेण समावेश दृष्टिगत होता है बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों के माध्यम से जितनी निष्कपट, सहज और स्वाभावि अभिव्यक्ति मानवीय मनोभावों की हुई है, उतनी अन्यत्र शायद ही सुलभ हो । इन गीतों में भावात्मक गुणों और स्वरलालित्य की प्रधानता है ।

बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोक के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थि धार्मिक, ऐतिहासिक एवं राजनीतिक जीवन के चित्रों का दिग्दर्शन हुआ है

ये गीत भारतीय सांस्कृतिक-जीवन का सजीव चित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं । इन लोकगीतों में लोक जीवन की गतिविधियों का हिसाब-किताब अथवा लेखा-जोखा तथा लोगों की रूचि-अरूचि का बाह्य-आंतरिक रूप दृष्टिगत होता है । इन गीतों में यथार्थता का समुचा एवं समग्र आग्रह रहता है, चूँकि ये लोक जीवन के स्वान्तःसुखाय निःसृत उद्गार हैं, जिनमें छल, आवरण, कृत्रिमता तथा अलंकरण का सर्वदा अभाव है । इन गीतों में वैयक्तिकता की अपेक्षा सार्वजनी विद्यमान है । वास्तव में बिलासपुर क्षेत्र में लोकगीत जन-जीवन के संघर्ष, श्रम प्रकृतिजन्य अवरोधों और सामाजिक आवश्यकताओं के मध्य यथार्थ से आविर्भूत हुए हैं ।

बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन के सहज भावों एवं मार्मिक गुणों की प्रचुरता है । जीवन की प्रत्येक गतिविधि की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अभिव्यंजना इन गीतों में हुई है । इन गीतों में जीवन के समस्त रंग रंजित हुए हैं । लोक मानव की प्राकृतिक, सुकोमल एवं मृदुल भावनाएँ इन गीतों में व्यक्त हुई हैं । इन लोकगीतों का सृजन नितांत स्वान्तःसुखाय के लिए हुआ है । केवल वही सहृदय व्यक्ति इनमें कुछ ढूँढ सकता है, जिसमें संवेदना एवं आत्मीयता की भावना हो ।

अन्ततः कहा जा सकता है कि बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में मनोवैज्ञानिक स्तरपर, लोक-हृदय को विभिन्न परतें उधेड़ कर रख दी हैं । इन गीतों में जीवन का स्त्रोत युग-युग से प्रवाहित हो रहा है । इनमें वैविध्य, विभिन्नता तथा विस्तार है । यही कारण है कि इनका क्षेत्र अत्यन्त विशद है । इनमें जीवन-दर्शन, भक्ति, कर्म, रहस्य, योग-मोक्ष तथा आध्यात्मिकता से लेकर, हर्ष-शोक, आकर्षण विकर्षण तथा संयोग वियोग इत्यादि के भाव समग्रतः निहित हैं ।